University in News on 08 October 2024

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

लविवि : प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में मिलेगी मदद

संवाद न्यूज एजेंसी

लविवि परिसर में मिड टर्म परीक्षा की तैयारी को लेकर बातचीत करते छात्र-छात्राएं। - अमर उजाला

टैगोर पुस्तकालय में उपलब्ध होंगी किताबें, विशेषज्ञ भी देंगे टिप्स

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के विद्यार्थी अब परिसर में ही कैट, क्लैट और सिविल सेवा जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर पाएंगे। इसके लिए उन्हें प्रतियोगी परीक्षा में काम आने वाली सभी जरूरी किताबें ऐतिहासिक टैगोर पुस्तकालय के रीडिंग रूम में उपलब्ध करवाई जाएंगी। इसके साथ ही कार्यशालाओं में विशेषज्ञ आकर उन्हें टिप्स देंगे।

इस समय छात्रों ने पढ़ाई को लेकर लाइब्रेरी कल्चर विकसित हो रहा है। लविवि ने अपने विद्यार्थियों की इस नब्ज को समझने के साथ ही इस पर काम करना शुरू कर दिया है जिससे उन्हें लाइब्रेरी में ही विषय सामग्री के साथ ही प्रतियोगी परीक्षा से संबंधित पाठ्य सामग्री मिल जाए।

टैगोर पुस्तकालय में इन दिनों नवीनीकरण का काम चल रहा है। इसमें विद्यार्थियों की सुविधा के अनुसार उन्हें आधुनिकतम परिवेश देने पर काम किया जा रहा है जिससे वह बिना बाधा के पढ़ाई कर सकें।

मानद लाइब्रेरियन प्रो. केया पांडेय ने बताया कि छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित समस्त किताबें लाइब्रेरी में उपलब्ध हो सकें, इसके लिए किताबों को विभागाध्यक्ष स्तर पर प्रस्तावित करवाने की योजना तैयार की गई है।

इसके साथ ही लाइब्रेरी के रीडिंग रूम में अब कॉमन लाइट सिस्टम विकसित किया जा रहा है। इससे छात्र बिना रुकावट अपनी पढ़ाई जारी रख सकेंगे।

विभागों में भी अपडेट की जाएंगी लाइब्रेरी

टैगोर लाइब्रेरी में छात्रों के दबाव को कम करने के लिए भी विवि प्रशासन ने योजना तैयार की है। विभागों की लाइब्रेरी को अपडेट किया जाएगा। लविवि के प्रत्येक विभाग में अपनी लाइब्रेरी है। इसमें किताबों का अच्छा संग्रह है लेकिन छात्र इसका कम इस्तेमाल करते हैं। वह पढ़ने के लिए सेंट्रल लाइब्रेरी का रुख करते हैं जिससे वहां दबाव बढ़ता है।

लविवि : कॉमर्स विभाग में 22 से मिड टर्म

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के कॉमर्स विभाग में 22 अक्तूबर से मिड टर्म परीक्षाओं की शुरुआत होगी। 26 अक्तूबर को संपन्न होंगी। विभागाध्यक्ष प्रो. राम मिलन ने सोमवार को इस संबंध में पत्र जारी करते हुए जानकारी दी। विद्यार्थी विभागीय नोटिस बोर्ड और विवि की वेबसाइट पर विस्तृत परीक्षा सूची देख सकते हैं। (संवाद)

कार्यपरिषद में चार असिस्टेंट प्रोफेसरों के चयन पर मुहर

संवाद न्यूज एजेंसी

लखनऊ विवि में सात असिस्टेंट लाइब्रेरियन भी भर्ती किए गए

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में सोमवार को तीन विभागों में असिस्टेंट प्रोफेसरों के चार पदों पर चयन प्रक्रिया पूरी की गई। कार्यपरिषद की आपात बैठक में खोले गए लिफाफों में इनके नामों पर मुहर लगाई गई। असिस्टेंट लाइब्रेरियन के सात पदों पर भर्ती को भी स्वीकृति दी गई।

प्रवक्ता प्रो. दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि जिन विभागों में शिक्षकों की भर्ती की गई है, उनमें संस्कृत और प्राकृत भाषा विभाग में एक असिस्टेंट प्रोफेसर, ओरिएंटल स्टडीज इन संस्कृत में एक असिस्टेंट प्रोफेसर और समाज कार्य विभाग में दो असिस्टेंट प्रोफेसर पदों पर भर्ती की गई है। कुलपति की उपस्थिति में हुई कार्यपरिषद की बैठक में सभी सदस्य उपस्थित रहे। चयनित शिक्षकों को जल्द ही नियुक्ति पत्र जारी कर दिया जाएगा।

पांच शिक्षकों को प्रोन्नति व एक को पदोन्नति : कार्यपरिषद की बैठक में पांच शिक्षकों को प्रोन्नति व एक शिक्षक को पदोन्नति देने का निर्णय लिया गया। पदोन्नत होने वाले में रक्षा अध्ययन विभाग के डॉ. डॉ. ओपी शुक्ला को एसोसिएट से प्रोफेसर पद पर पदोन्नत किया गया।

साथ ही असिस्टेंट प्रोफेसरों में डॉ. रिचा शुक्ला, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. भुवनेश्वरी भारद्वाज, डॉ. सत्यकेतु और डॉ. अभिमन्यु को प्रोन्नत कर इनकी स्टेज बढ़ाई गई है।

भाषा विवि : शिक्षकों के 116 पदों पर भर्ती के लिए दोबारा विज्ञापन

लखनऊ। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय में शिक्षकों के 116 पदों पर भर्ती के लिए दोबारा विज्ञापन जारी कर दिया गया है। 15 प्रोफेसर, 27 एसोसिएट प्रोफेसर और 74 असिस्टेंट प्रोफेसर के पदों पर भर्ती होगी। अभ्यर्थी 22 सितंबर तक आवेदन फॉर्म भर सकेंगे जो विवि की वेबसाइट kmclu.ac.in पर उपलब्ध है। विवि में मार्च 2024 में स्ववित्तपोषित विभागों में शिक्षकों का टोटा दूर करने के लिए 116 पदों पर आवेदन मांगे थे। इन पर करीब 350 अभ्यर्थियों ने आवेदन किए थे। लेकिन लचर कार्यशैली के चलते भर्ती प्रक्रिया पूरी न हो सकी। विवि ने अब सभी पदों पर दोबारा विज्ञापन जारी किया है। सामान्य, ओबीसी और ईडब्ल्यूएस अभ्यर्थियों को 3000 आवेदन शुल्क और एससी-एसटी के अभ्यर्थियों को 2500 रुपये आवेदन शुल्क जमा करना होगा। (संवाद)

HINDUSTAN PAGE 9

एलयू में 11 नई नियुक्तियां आठ शिक्षकों को पदोन्नति

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय में तीन विभागों के आठ शिक्षकों को पदोन्नति मिली है। जबकि सात असिस्टेंट लाइब्रेरियन और चार शिक्षकों का चयन किया गया। एलयू के मंथन कक्ष में कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय की अध्यक्षता में हुई कार्य परिषद की बैठक में पदोन्नति और नियुक्तियों का निर्णय लिया गया।

कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने बताया कि रक्षा अध्ययन के डॉ. ओपी शुक्ला को एसोसिएट से प्रोफेसर पद पर प्रमोशन दिया गया। संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग की डॉ. भुवनेश्वरी भारद्वाज, डॉ. सत्यकेतु, डॉ. अभिमन्यु, डॉ. अशोक कुमार शतपथी को असिस्टेंट से एसोसिएट प्रोफेसर और डॉ. ऋचा पांडेय ने असिस्टेंट प्रोफेसर स्टेज वन से स्टेज टू पर पदोन्नति मिली। वहीं प्राच्य संस्कृत विभाग की डॉ. प्रेरणा माथुर को असिस्टेंट से एसोसिएट प्रोफेसर और डॉ. श्यामलेश कुमार तिवारी को असिस्टेंट प्रोफेसर स्टेज वन से सीनियर स्केल टू पर प्रमोट किया गया।

कुलपति प्रोफेसर राय का कहना है कि संस्कृत एवं प्राकृत भाषा व प्राच्य संस्कृत विभाग में एक-एक नियमित और समाज कार्य में दो संविदा शिक्षकों को नियुक्त किया गया है। सात पदों पर असिस्टेंट लाइब्रेरियन की भी नियुक्ति की गई है।

i-NEXT PAGE 5

एलयू में आठ शिक्षकों के प्रमोशन पर लगी मुहर

एलयू में चार नए शिक्षक, सात सहायक लाइब्रेरियन का चयन

LUCKNOW (7 OCT): लखनऊ विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों को चार नए शिक्षक और सात असिस्टेंट लाइब्रेरियन मिल गए. सोमवार को मंथन कक्ष में वीसी प्रो. आलोक कुमार राय की अध्यक्षता में हुई कार्यपरिषद की बैठक में इनके प्रस्ताव पर मुहर लगा दी गई.वहीं, आठ शिक्षकों को प्रोन्नति भी दे दी गई.

इनविभागों के लिए चयन

प्रवक्ता प्रोफेसर दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि संस्कृत एवं प्राकृतिक भाषा एवं ओरिएंटल स्टडीज इन संस्कृत में एक-एक नए सहायक प्रोफेसर नियुक्त हुए है. वहीं, सोशल वर्क विभाग में कम्युनिटी मेडिसिन एंड पब्लिक हेल्थ व क्रिमिनोलाजी एंड क्रिमिनल जस्टिस एडमिनिस्ट्रेशन के लिए एक-एक सहायक प्रोफेसर का चयन हुआ है. इसके अलावा सात नए असिस्टेंट लाइब्रेरियन का चयन भी किया गया.

इन्हें भी मिली प्रोन्नति

संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग में सहायक प्रोफेसर डा. रिचा पांडेय को स्टेज एक से दो, सहायक प्रोफेसर डा. अशोक कुमार शतपथी, डा. भुवनेश्वरी, डा. सत्यकेतु और डा. अभिमन्यु सिंह को एसोसिएट प्रोफेसर पद पर प्रोन्नति दी गई. प्राच्य संस्कृत विभाग में सहायक प्रोफेसर डा. प्रेरणा माथुर को एसोसिएट और सहायक प्रोफेसर डा. श्यामलेश तिवारी को स्टेज एक से दो पर प्रोन्नत किया गया.

डा. ओपी शुक्ला बने प्रोफेसर

कार्यपरिषद की बैठक में रक्षा अध्ययन विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर एवं पूर्व हेड डा. ओपी शुक्ला को प्रोफेसर बना दिया गया. उनका प्रमोशन कई साल से लंबित था. सोमवार को प्रमोशन होने पर शिक्षकों ने उन्हें बधाई दी. डा. ओपी शुक्ला 30 जून 2025 को सेवानिवृत्त हो जाएंगे. इसके अलावा कई अन्य निर्णय भी लिए गए.

JAGRAN CITY PAGE III

लखनऊ विश्वविद्यालय : चार नए शिक्षक, सात सहायक लाइब्रेरियन का चयन

जासं • लखनऊ : लवि के विभिन्न विभागों को चार नए शिक्षक व सात असिस्टेंट लाइब्रेरियन मिल गए। मंथल कक्ष में कुलपति प्रो। आलोक कुमार राय की अध्यक्षता में हुई कार्यपरिषद की बैठक में इनके प्रस्ताव पर मुहर लगा दी गई। वहीं, आठ शिक्षकों को प्रोन्नति भी दे दी गई।

विश्वविद्यालय के प्रवक्ता प्रो. दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि संस्कृत एवं प्राकृतिक भाषा एवं ओरिएंटल स्टडीज इन संस्कृत में एक-एक नए सहायक प्रोफेसर नियुक्त हुए हैं। वहीं, सोशल वर्क विभाग में कम्युनिटी मेडिसिन एंड पब्लिक हेल्थ व क्रिमिनोलाजी एंड क्रिमिनल जस्टिस एडमिनिस्ट्रेशन के लिए एक-एक सहायक प्रोफेसर का चयन हुआ है। इसके अलावा सात नए असिस्टेंट लाइब्रेरियन का चयन भी किया गया।

डा. ओपी शुक्ला बने प्रोफेसर : कार्यपरिषद की बैठक में रक्षा अध्ययन विभाग के एसोसिएट प्रो. एवं पूर्व हेड डा. ओपी शुक्ला को प्रोफेसर बना दिया गया। उनका प्रमोशन कई साल से लंबित था। सोमवार को प्रमोशन होने पर शिक्षकों ने उन्हें बधाई दी। डा. ओपी शुक्ला 30 जून 2025 को सेवानिवृत्त हो जाएंगे।

इन्हें भी मिली प्रोन्नति : संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग में सहायक प्रो. डा. रिचा पांडेय को स्टेज एक से दो, सहायक प्रो. डा. अशोक कुमार, डा. भुवनेश्वरी, डा. सत्यकेतु और डा. अभिमन्यु सिंह को एसोसिएट प्रोफेसर पद पर प्रोन्नति दी गई। प्राच्य संस्कृत विभाग में सहायक प्रो. डा. प्रेरणा माथुर को एसोसिएट और सहायक प्रो. डा. श्यामलेश तिवारी को स्टेज एक से दो पर प्रोन्नत किया गया।

PIONEER PAGE 3

शिक्षकों की प्रोन्नति और चयन पर लविवि कार्यपरिषद की मोहर

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ विवि में सोमवार को सम्पन्न हुई कार्य परिषद की बैठक शिक्षकों के नाम रही। बैठक में जहां शिक्षकों की प्रोन्नति से संबंधित लिफाफे खोले गये, वहीं नव चयनित शिक्षकों के नाम पर भी कार्य परिषद की मोहर लगी। विवि के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय की अध्यक्षता में आयोजित कार्य परिषद की बैठक में पहले शिक्षकों की प्रोन्नति से संबंधित प्रकरण खोला गया। प्रोन्नति पाने वाले शिक्षकों में डिफेंस स्टडीज के डॉ. ओपी शुक्ला, संस्कृत एवं प्राकृत भाषा के डॉ. रिचा पाण्डेय, डॉ. अशोक कुमार शथपथी, डॉ. भुवनेश्वरी, डॉ. सत्यकेतु, डॉ. अभिमन्यू और ओरिएंटल स्टडीज एवं संस्कृत में डॉ. प्रेरणा माथुर, डॉ. श्यामलेश कुमार तिवारी का नाम शामिल है।

व्यक्तिगत कल्याण को प्रभावित करती हैं आर्थिक चुनौतियां

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग ने लखनऊ प्रबंधन संघ के सहयोग से शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए खुशी विषय पर सोमवार को एक पैनल चर्चा का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्य सचिव और एलएमए के पूर्व अध्यक्ष आलोक रंजन सहित प्रतिष्ठित पैनलिस्ट एक साथ आए।

सत्र की शुरुआत पैनलिस्टों के गर्मजोशी भरे स्वागत भाषण से हुई, जिसके बाद संघ के सचिव राहुल दत्त ने कार्यक्रम के विषय का परिचय दिया, जिन्होंने वक्ताओं का परिचय भी कराया। सत्र का संचालन आलोक रंजन ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में, आलोक रंजन ने केवल भौतिकवादी लक्ष्यों की खोज के बजाय सफलता के लिए एक प्रेरक शक्ति के रूप में खुशी के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने हमारी व्यक्तिगत ताकत और कमजोरियों को पहचानने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि हमारी सफलता से खुशी नहीं मिलती बल्कि इसका उल्टा होता है। उसके बाद प्रोफेसर मधुरिमा प्रधान ने मन की शक्ति और खुशी की आंतरिक प्रकृति पर जोर देते हुए भारतीय मनोविज्ञान से अंतर्दृष्टि प्रदान की, और दर्शकों को याद दिलाया कि हम जैसा सोचते हैं वैसा ही बन जाते हैं। उन्होंने एक कविता सुनाकर अपना संबोधन समाप्त किया, कोशिश कर, हल निकलेगा, आज नहीं तो, कल निकलेगा। अर्जुन के तीर-सा साध, मरुस्थल से भी जल निकलेगा, अभ्यास को पानी दे, बंजर मंजिल से भी फल निकलेगा। डॉ. अर्चना शुक्ला ने अपने संबोधन में आत्म-नियमन, आत्मनिरीक्षण और भावनात्मक नियंत्रण की आवश्यकता पर जोर दिया, छात्रों को अपनी ताकत और कमजोरियों को समझने के लिए प्रोत्साहित किया।

प्रो. अरविंद मोहन ने खुशी को अर्थशास्त्र से जोड़ा, यह समझाते हुए कि आर्थिक चुनौतियाँ व्यक्तिगत कल्याण को कैसे प्रभावित करती हैं और ज्ञान और खुशी दोनों को बढ़ावा देने में कक्षा में बातचीत के महत्व को रेखांकित किया। चर्चा एक इंटरैक्टिव प्रश्नोत्तर सत्र के साथ समाप्त हुई, जहाँ छात्रों ने शैक्षणिक यात्रा का आनंद कैसे लें, आध्यात्मिकता का प्रभाव और रिश्तों में खुशी के महत्व जैसे विषयों के बारे में पूछताछ की।

पैनलिस्टों ने दर्शकों द्वारा उठाए गए प्रत्येक प्रश्न को सोच-समझकर संबोधित किया, अपने बिंदुओं को स्पष्ट करने के लिए वास्तविक जीवन के उदाहरण साझा किए। अपने समापन भाषण में,रंजन ने छात्रों से वर्तमान क्षण को अपनाने और अंतिम लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय सफलता प्राप्त करने की प्रक्रिया से खुशी प्राप्त करने का आग्रह किया। उन्होंने दैनिक जीवन में दयालुता, उदारता और कृतज्ञता के कार्यों को शामिल करने के महत्व पर भी जोर दिया, यह देखते हुए कि यह अभ्यास स्वाभाविक रूप से खुशी की भावना को बढ़ावा देता है। यह कार्यक्रम खुशी, व्यक्तिगत कल्याण और शैक्षणिक उत्कृष्टता के बीच गहरे संबंध की एक मूल्यवान याद दिलाने के रूप में कार्य करता है।

AMRIT VICHAR PAGE 4

लविवि में आठ शिक्षकों को मिली पदोन्नति

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- चार नए असिस्टेंट प्रोफेसरों की नियुक्ति की गई
- कार्यपरिषद की बैठक में लिया गया निर्णय

अमृत विचारः लखनऊ विश्वविद्यालय में कुलपति डॉ आलोक कुमार राय की अध्यक्षता में कार्य परिषद की बैठक हुई। इसमें विश्वविद्यालय के आठ शिक्षकों का पदोन्नति किया गया और चार नए असिस्टेंट प्रोफेसर की नियुक्ति की गई।

7 असिस्टेंट लाईब्रेरियन नियुक्त करने का फैसला भी लिया गया। विवि के डॉ दुर्गेश श्रीवास्तव ने रक्षा अध्ययन विभाग के डॉ ओपी शुक्ला, संस्कृत और प्राकृत भाषा विभाग की डॉ रिचा पाण्डेय, डॉ अशोक कुमार सत्यार्थी, डॉ भुवनेश्वरी, डॉ सत्यकेतु और डॉ अभिमन्यु, ओरिएंटल स्टडीज डॉ प्रेरणा माथुर, डॉ. सियंकेश कुमार तिवारी को पदान्नति दी गई है सीधी भर्ती में समाज कार्य विभाग, संस्कृत और प्राकृत भाषा विभाग, संस्कृत ओरिएंटल स्टडीज चार असिस्टेंट प्रोफेसर की नियुक्ति की गई है।

खुशी के महत्व पर लविवि के मनोविज्ञान विभाग में चर्चा

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

लविवि मनोविज्ञान विभाग में चर्चा करते विशेषज्ञ। अमृत विचार

अमृत विचारः लखनऊ विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग में लखनऊ प्रबंधन संघ के सहयोग से शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए खुशी विषय पर पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। आलोक रंजन ने सफलता के लिए एक प्रेरक शक्ति के रूप में खुशी के महत्व पर प्रकाश डाला।

प्रोफेसर मधुरिमा प्रधान ने मन की शक्ति और खुशी की आंतरिक प्रकृति पर जोर दिया। डॉ. अर्चना शुक्ला ने आत्म-नियमन, आत्मनिरीक्षण और भावनात्मक नियंत्रण की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने छात्रों को अपनी ताकत और कमजोरियों को समझने के लिए प्रोत्साहित किया।

प्रो. अरविंद मोहन ने खुशी कोअर्थशास्त्र से जोड़ते हुए कहा कि आर्थिक चुनौतियां व्यक्तिगत कल्याण को कैसे प्रभावित करती हैं।

समापन भाषण में रंजन ने छात्रों से वर्तमान क्षण को अपनाने और अंतिम लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय सफलता प्राप्त करने की प्रक्रिया से खुशी प्राप्त करने का आग्रह किया। कार्यक्रम में प्रो. मधुरिमा प्रधान, प्रो. अरविंद मोहन, डॉ. अर्चना शुक्ला, राहुल दत्त मौजूद रहे।

SWATANTRA BHARAT PAGE 2

दैनिक जीवन में दयालुता, उदारता को शामिल करें : डॉ. अर्चना

स्वतंत्र भारत संवाददाता, लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग ने लखनऊ

- लविवि में शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए खुशी पर पैनल चर्चा

प्रबंधन संघ के सहयोग से शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए खुशी विषय पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्य सचिव और एलएमए के पूर्व अध्यक्ष आलोक रंजन सहित प्रतिष्ठित पैनलिस्ट एक साथ आए। इस दौरान लविवि में हैप्पी थिंकिंग लेबोरेटरी की संस्थापक निदेशक प्रो.मधुरिमा प्रधान,कला संकाय के डीन प्रो.अरविंद मोहन और मनोविज्ञान विभाग की प्रमुख डॉ.अर्चना शुक्ला मौजूद रही। सत्र की शुरुआत पैनलिस्टों के गर्मजोशी भरे स्वागत भाषण से हुई, जिसके बाद एलएमए के सचिव राहुल दत्त ने कार्यक्रम के विषय का परिचय दिया, जिन्होंने वक्ताओं का परिचय भी कराया।

सत्र का संचालन आलोक रंजन ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में, आलोक रंजन ने केवल भौतिकवादी लक्ष्यों की खोज के बजाय सफलता के लिए एक प्रेरक शक्ति के रूप में खुशी के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने हमारी व्यक्तिगत ताकत और कमजोरियों को पहचानने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि हमारी सफलता से खुशी नहीं मिलती बल्कि इसका उल्टा होता है। उसके बाद प्रो.मधुरिमा प्रधान ने मन की शक्ति और खुशी की आंतरिक प्रकृति पर जोर देते हुए भारतीय मनोविज्ञान से अंतर्दृष्टि प्रदान की और दर्शकों को याद दिलाया कि हम जैसा सोचते हैं वैसा ही बन जाते हैं। उन्होंने एक कविता सुनाकर अपना संबोधन समाप्त किया। कोशिश कर, हल निकलेगा, आज नहीं तो, कल निकलेगा। अर्जुन के तीर-सा साध, मरुस्थल से भी जल निकलेगा, अभ्यास को पानी दे, बंजर मंजिल से भी फल निकलेगा।

डॉ.अर्चना शुक्ला ने अपने संबोधन में आत्मनियमन, आत्मनिरीक्षण और भावनात्मक नियंत्रण की आवश्यकता पर जोर दिया। छात्रों को अपनी ताकत और कमजोरियों को समझने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रो.अरविंद मोहन ने खुशी को अर्थशास्त्र से जोड़ा, यह समझाते हुए कि आर्थिक चुनौतियां व्यक्तिगत कल्याण को कैसे प्रभावित करती हैं और ज्ञान और खुशी दोनों को बढ़ावा देने में कक्षा में बातचीत के महत्व को रेखांकित किया। चर्चा एक इंटरैक्टिव प्रश्नोत्तर सत्र के साथ समाप्त हुई, जहां छात्रों ने शैक्षणिक यात्रा का आनंद कैसे लें, आध्यात्मिकता का प्रभाव और रिश्तों में खुशी के महत्व जैसे विषयों के बारे में पूछताछ की। पैनलिस्टों ने दर्शकों द्वारा उठाए गए प्रत्येक प्रश्न को सोच-समझकर संबोधित किया। अपने बिंदुओं को स्पष्ट करने के लिए वास्तविक जीवन के उदाहरण साझा किए। अपने समापन भाषण में रंजन ने छात्रों से वर्तमान क्षण को अपनाने और अंतिम लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय सफलता प्राप्त करने की प्रक्रिया से खुशी प्राप्त करने का आग्रह किया। उन्होंने दैनिक जीवन में दयालुता, उदारता और कृतज्ञता के कार्यों को शामिल करने के महत्व पर भी जोर दिया। यह देखते हुए कि यह अभ्यास स्वाभाविक रूप से खुशी की भावना को बढ़ावा देता है। यह कार्यक्रम खुशी, व्यक्तिगत कल्याण और शैक्षणिक उत्कृष्टता के बीच गहरे संबंध की एक मूल्यवान याद दिलाने के रूप में कार्य करता है।

VOICE OF LUCKNOW PAGE 6

व्यक्तिगत ताकत और कमजोरियों को पहचानना जरूरी : आलोक रंजन

- लविवि के मनोविज्ञान विभाग में एलएमए के सहयोग से खुशीविषय पर कीपैनल चर्चा

विशेष संवाददाता (vol)

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग ने लखनऊ प्रबंधन संघ (एलएमए) के सहयोग से शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए खुशी विषय पर एक पैनल चर्चा का आयोजन सोमवार को किया।इस कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्य सचिव और एलएमए के पूर्व अध्यक्ष आलोक रंजन सहित पैनलिस्ट एक साथ आये।

लखनऊ विश्वविद्यालय में हैप्पी थिंकिंग लेबोरेटरी की संस्थापक निदेशक प्रो. मधुरिमा प्रधान, लखनऊ विश्वविद्यालय में कला संकाय के डीन प्रो. अरविंद मोहन और लखनऊ विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान विभाग की प्रमुख डॉ. अर्चना शुक्ला मौजूद रहीं।

उद्घाटन भाषण में आलोक रंजन ने केवल भौतिकवादी लक्ष्यों की खोज के बजाय सफलता के लिए एक प्रेरक शक्ति के रूप में खुशी के महत्व पर प्रकाश डाला।उन्होंने हमारी व्यक्तिगत ताकत और कमजोरियों को पहचानने के महत्व पर जोर दिया।उन्होंने यह भी कहा कि हमारी सफलता से खुशी नहीं मिलती बल्कि इसका उल्टा होता है। उसके बाद प्रो. मधुरिमा प्रधान ने मन की शक्ति और खुशी की आंतरिक प्रकृति पर जोर देते हुए भारतीय मनोविज्ञान से अंतर्दृष्टि प्रदान की और दर्शकों को याद दिलाया कि हम जैसा सोचते हैं वैसे ही बन जाते हैं।

डॉ. अर्चना शुक्ला ने अपने संबोधन में आत्म-नियमन, आत्मनिरीक्षण और भावनात्मक नियंत्रण की आवश्यकता पर जोर दिया।छात्रों को अपनी ताकत और कमजोरियों को समझने के लिए प्रोत्साहित किया।प्रो. अरविंद मोहन ने खुशी को अर्थशास्त्र से जोड़ा, यह समझाते हुए कि आर्थिक चुनौतियां व्यक्तिगत कल्याण को कैसे प्रभावित करती हैं और ज्ञान और खुशी दोनों को बढ़ावा देने में कक्षा में बातचीत के महत्व को रेखांकित किया।

चर्चा एक इंटरैक्टिव प्रश्नोत्तर सत्र के साथ समाप्त हुई, जहां छात्रों ने शैक्षणिक यात्रा का आनंद कैसे लें, आध्यात्मिकता का प्रभाव और रिश्तों में खुशी के महत्व जैसे विषयों के बारे में पूछताछ की। पैनलिस्टों ने दर्शकों द्वारा उठाए गए प्रत्येक प्रश्न को सोच-समझकर संबोधित किया, अपने बिंदुओं को स्पष्ट करने के लिए वास्तविक जीवन के उदाहरण साझा किए। अपने समापन भाषण में रंजन ने छात्रों से वर्तमान क्षण को अपनाने और अंतिम लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय सफलता प्राप्त करने की प्रक्रिया से खुशी प्राप्त करने का आग्रह किया।उन्होंने दैनिक जीवन में दयालुता, उदारता और कृतज्ञता के कार्यों को शामिल करने के महत्व पर भी जोर दिया, यह देखते हुए कि यह अभ्यास स्वाभाविक रूप से खुशी की भावना को बढ़ावा देता है।

LOKSATYA PAGE 2

खुशी के लिए कमजोरियों को पहचानने पर जोर

पैनल चर्चा

- एलयू के मनोविज्ञान विभाग में कार्यक्रम

लखनऊ, लोकसत्य। लखनऊ विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग ने लखनऊ प्रबंधन संघ के सहयोग से शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए खुशी विषयक पैनल चर्चा आयोजित की। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्य सचिव और लखनऊ प्रबंधन संघ के पूर्व अध्यक्ष आलोक रंजन सहित प्रतिष्ठित पैनलिस्ट एक साथ आए। लखनऊ विश्वविद्यालय में हैप्पी थिंकिंग लेबोरेटरी की संस्थापक निदेशक प्रो. मधुरिमा प्रधान; लखनऊ विश्वविद्यालय में कला संकाय के डीन प्रो. अरविंद मोहन; और लखनऊ विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान विभाग की प्रमुख डॉ. अर्चना शुक्ला सहित अनेक प्रबुद्धजन व छात्र-छात्राएं मौजूद रहे। आलोक रंजन ने केवल भौतिकवादी लक्ष्यों की खोज के बजाय सफलता के लिए एक प्रेरक शक्ति के रूप में खुशी के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने हमारी व्यक्तिगत ताकत और कमजोरियों को पहचानने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि हमारी सफलता से खुशी नहीं मिलती बल्कि इसका उल्टा होता है। प्रोफेसर मधुरिमा प्रधान ने मन की शक्ति और खुशी की आंतरिक प्रकृति पर जोर देते हुए भारतीय मनोविज्ञान से अंतर्दृष्टि प्रदान की, और दर्शकों को याद दिलाया कि हम जैसा सोचते हैं वैसा ही बन जाते हैं।

उन्होंने एक कविता सुनाकर अपना संबोधन समाप्त किया: कोशिश कर, हल निकलेगा, आज नहीं तो, कल निकलेगा। अर्जुन के तीर-सा साध, मरुस्थल से भी जल निकलेगा, अभ्यास को पानी दे, बंजर मंजिल से भी फल निकलेगा।

डॉ. अर्चना शुक्ला ने अपने संबोधन में आत्म-नियमन, आत्मनिरीक्षण और भावनात्मक नियंत्रण की आवश्यकता पर जोर दिया, छात्रों को अपनी ताकत और कमजोरियों को समझने के लिए प्रोत्साहित किया।